प्रार्थना

ऊँ आर्यां कात्यायनीं देवीम्,
अभीष्ट फलदायिनीम् ।
देहि विद्या महादेवि ,
नमामि त्वां सरस्वति ।।

हे कात्यायन ऋषि की पुत्री, मन चाहे फल को देने वाली माँ सरस्वती हम आपको प्रणाम करते हैं । हे माँ सरस्वती हमें विद्या प्रदान कीजिए ।

ऊँ सहनाववतु सह नौ भुनक्तु
सह वीर्यं करवावहै
तेजस्विनावधीतमस्तु
मा विद्विषावहै ।।

प्रभु आप हम दोनों गुरू-शिष्य की एक साथ रक्षा करें,पोषण करें, हम मिलजुल कर काम करें और शक्तिशाली बनें । आप हमें, ज्ञान प्राप्त करने की, वेदों को समझने की तथा शक्ति का मिलजुलकर प्रयोग करने की क्षमता प्रदान करें।
हमारा ज्ञान तेजमय प्रभावशाली हो। हम परस्पर वैमनस्य की भावना न रखें।

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः, गुरूर्देवो महेश्वरः ।
गुरूः साक्षात्परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।

गुरू ही ब्रह्मा है गुरू ही विष्णु है, गुरू ही महेश्वर/शिव है। गुरू साक्षात पर ब्रह्म है। सबसे परे है। उस गुरू को नमस्कार है।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बंधु च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव ।।

हे देवाधिदेव आप ही मेरे माता, पिता, बंधु (भाई) मित्र, विद्या तथा धन हो, आप ही मेरे सब कुछ हो । अर्थात्, मैं पूर्ण रूप से आपके प्रति समर्पित हूँ

ऊँ भूर्भूवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

हम उस सविता देवता के (सूर्य देव के) वरण करने योग्य तेज का ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्वि को प्रकाशित करे ।